श्रीमद्भगवत् गीता क्या है?

*राजेन्द्र कुमार सैनी

प्राचीन भारतीय ऋषि–मुनियों ने भारत के असंख्य साहित्य ग्रन्थ–रत्नों की रचना की है। महर्षि वेदव्यास ने श्रीमद् भगवत गीता की रचना की जो "संसार की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में से एक है। एक राष्ट्र और एक सांस्कृतिक समाज के पुनरूथान में एक शक्तिशाली और निर्माणकारी कारक है।" ये कथन महर्षि अरविन्द का है। यह कथन सत्य है" उपनिषदों में ईश्वरवादी विचार इतने बिखेर हुए थे कि व्यावहारिक कार्यों के लिए मानव उद्वार की ऐसी प्रणाली में उन्हे बंधना आवश्यक था जो आसानी से लोगों की समझ में आ जाए। लगता है ये ही के परिस्थितियों थी जिनमें गीता का आविर्भाव हुआ।" श्रीभद्भगवत् गीता कलम बधं 'किया गया।

श्री के. एम. मुंशी" का यह कथन है कि, "यह मनुष्य को सफल जीवन की शिक्षा देती है जिससे मनुष्य आत्मानुशासन के माध्यम ये देवत्व प्राप्त कर सकता है।" श्रीमद्भगवत मी एक महान शिक्षा ग्रन्थ निःसन्देह जिसका ज्ञान समय से अछूता है ऐसा विचार भी बाल गंगाधर तिलक का है। आचार्य विनोबा भावे "जीवन के सिद्धान्तों को व्यवहार में लाने की जो कला या युक्ति है, उसी को योग कहते है, गीता सभी योगों का सार है, उपनिषदों का उपनिषद है, गीता धर्म ज्ञान का एक कोष है''। महात्मा गांधी "गीता जीती. जागती जीवन देने वाली अमर माता है।" डॉ. राम गोपाल वर्मा गीता एक विश्व दर्शन है। गीता मनुष्य के सामाजिक स्वरूप पर बल देती है और निः स्वार्थ कर्मशील जीवन का समर्थन करती है।" गीता के महत्व को प्रकट करने में उसमें प्राक्कथन में सत्य ही लिखा है।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनंदनः ।

पार्थोवेत्सः सुधी भोंक्ता दुग्धं गीतामृंत महत।

(सभी उपनिषद्, गाय रूप में के रूप में है, कृष्णा ग्वाल रूप में है, अजुर्न वत्स रूप मे है और विद्वान महान् गीता अमृत का पान करने वाले है)

उपनिषदों का अमृत सन्देश गीता में भगवान कृष्ण के मुख से महर्षि वेद व्यास ने रखा है। गीता मनुष्य के धर्म–कर्म की एक विश्व विख्यात पुस्तक है। अमरीका में कृष्ण चैतन्य आयोजन के प्रवर्तक श्री ए. सी. भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद का विचार है कि "सामान्यतया लोग, विशेषकर कलियुग में – यह ज्ञान नहीं रखते कि भौतिक या बाह्म प्रकृति अति शक्तिशाली है क्योकि व्यक्ति भौतिक प्रकृति के तीव्र नियमों से बंधा है। जीवित तथ्य सुखद रूप में प्रभु का अंग है और इस प्रकार व्यक्ति का प्राकृतिक कार्यप्रभु की तत्काल सेवा करना है।. यहीं जीवन की सर्वोच्च पूर्णता है। यही गीता का केन्द्रीय उपदेश है। उचित की सैधिकता गीता एवं गीता दर्शन और गीता के शिक्षा दर्शन के अध्ययन से ज्ञात हो सकती है।

गीता सभी परिस्थितियों' के लिए मानव की पथं प्रदर्शिका है, जीवन–संग्राम में विजय प्राप्ति का साधन है और मोक्षदात्री है।

गीत क्या हैः– "गीता एक लम्बी कविता है। .....गीता आध्यत्मिक दर्शन की अपेक्षा जीवन की कला पर एक रचना है। सामान्य व्यक्ति. .....का ईश्वर मे विश्वास होता है। विश्वास और भक्ति के साथ सामान्य व्यक्ति को अपना कर्तव्य करना चाहिए"" यही गीता है। गीता सक्रिय जीवन का मार्ग निर्देशक है। 7002 लोकों में रचित 18 अध्याय इसमें हैं जो तीन भागों में वर्ण्य विषयानुसार विभाजित किये जाते हैं। प्रथम छः अध्यायों में ईश्वर ज्ञान, दूसरे छ. अध्यायों में विश्व –ज्ञान और शेष छः अध्यायों में आत्मा के ज्ञान का विवेचन है ईश्वर जगत और जीवात्मा ये तीन तत्व गीता के वर्ण विषय कहे जाते है। श्री–सी. राजगोपालाचारी ने लिखा है कि, "जब बुद्धि व्यक्ति को सभी प्राणियों में अनन्य एकता तथा सभी आकारों के एक अविभाजित पूर्णता देखने में सहायता देती है, तब इसे सही ज्ञान प्रकाश जानना चाहिये। मनुष्य अपने कर्तव्य में प्रवृत्त होने पर पूर्णता को प्राप्त करता है। अपने कर्तव्य की निष्ठा से वह आध्यात्मिक पुरुष को प्राप्त करता है और यही जीवन का लक्ष्य है। यही ज्ञान गीता है। जगद्गुरु शंकराचार्य ने ठीक ही कहा है– समस्त वेदार्थ सारसंग्रहभूतम्। गीता की उक्ति है–

असक्त बुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।
वैस्कर्म्यसिद्धि परमा संन्यासेनाधिगच्छति।। (18:49)

(हे अर्जुन! सर्वत्र आसक्ति रहित बुद्धि वाला, स्पृहारहित और जीते हुए अन्तः करण वाला पुरुष परम नैष्कर्म्य सिद्धि को प्राप्त होता है अर्थात् क्रिया रहित शुद्व सच्चिदानन्द परमात्मा की प्राप्ति रूप परमसिद्धि को प्राप्त होता है।)

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु मद् भक्ति लभते पराम् 11 (18:54)

वह सच्चिदानन्दन ब्रह्म के एकीभाव में एकीभाव से स्थित हुआ प्रसन्नत चिन्ह वाला पुरुष न तो किसी वस्तु के लिए शोक करता है और न किसी की आकांक्षा ही करता है और सब भूतों में समभाव हुआ मेरी परम भक्ति को प्राप्त होता है।

श्रीमद्भगवत गीता एक भक्ति काव्य है और भक्ति भावना से ही इसे समझा जा सकता है। गीता केवल भक्ति–भाव जाग्रत नहीं करती बल्कि, 'ब्रह्म जिज्ञासा' को भी जागृत करती है । यह मानवता को भी जागृत करती है। श्री ए.सी. भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद लिखते है, "मानवता उसी समय आरम्भ होती है, जब इस प्रकार की जिज्ञासा मनुष्य के मन में जागृत हो जाती है। श्री भगवदत गीता शब्द में भगवत् और गीता दो शब्द मिलते हैं जिनका अर्थ हुआ भगवान के द्वारा कहा गया। अतएवं भगवद्गीता एक भक्ति काव्य है जो भगवान कृष्ण के उपदेशों को देती है। भगवद्गीता महाभारत का एक अंश है, इसलिए भी यह एक भक्ति काव्य माना जा सकता है। भक्ति, दर्शन आदर्श, उपदेश के पूर्ण यह एक अमूल्य काव्य मय ग्रन्थ है जिसमें भक्ति व ज्ञान की रसानुभुति होती है और परमानंद की प्राप्ति होती है।

भगवद्गीता में पाँच तथ्यों पर विचार किए गए है–

1. ईश्वर क्या है?
2. जीवित प्राणी (जीव) क्या है?
3. जगत की प्रकृति (व्यवस्था) क्या है?
4. यह समय के द्वारा कैसे नियन्त्रित होता है?
5. जीवित प्राणियां के कर्म क्या है?

इसमें भी आगे जगत की सत्यता, 24 तत्वों से इसके निर्माण की पूर्णताः इसका भी प्रकाशन इसमें हुआ है। गीता में सनातन धर्म मिलता है। सनातन धर्म का तात्पर्य विश्व के सभी जीवित प्राणियों के कार्य व्यावहार वस्तुतः गीता विश्व मानव धर्म की पुस्तक है। मानव धर्म ही सनातन धर्म है जिसका न आदि है और न अंत है। ऐसा श्री रामानुजाचार्य का मत है। गीता विश्व के लोगों का आध्यात्मिक, धार्मिक श्री उपदेशात्मक ग्रन्थ है। अतः गीता दर्शन, धर्म, समाज, मानव, कर्म, आदि पर पूर्ण प्रकाश डालने वाला महान एवं विश्व विख्यात काव्य ग्रथ माना जाता है।

***शोधार्थी**
शिक्षाशास्त्र विभाग
श्याम विश्वविद्यालय
दौसा (राज.)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उमेश मिश्र – भारतीय दर्शन, हिंदी समिति, उ. प्र., लखनऊ।
2. डॉ. राम शकल पाण्डेय – पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा दर्शन उ. प्र. इलाहाबाद (प्रयागराज)
3. श्री सी. राजगोपालाचारी – भगवत्गीता, पृष्ठ. 104।
4. श्री ए. सी. भक्ति वेदांत स्वामी प्रभुपाद – भगवत्गीता पेज इंट इज, पृ. 6
5. श्री के. एम. मुंशी – भगवत्गीता एण्ड मॉडर्न लाइफ, पृष्ठ. 19